R.N.I. No. RAJHIN/2019/77793

Postal Reg. No. RAJ/AJ/207/2025-2027

मरूधरा टुडे

पाक्षिक

वर्ष 07 | अंक- 19 | अजमेर, रविवार 01 फरवरी, 2026 | Email Id: marudhartoday.omfp@gmail.com | मूल्य 3/- रुपये | कुल पृष्ठ-04

विज्ञापन एवं
वार्षिक सदस्यता
हेतु कार्यकारी
सम्पादक-
सहर
मो.8107416712

अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता ''दिग्नाद'' सम्पन्न

संस्कृति, संस्कार और युवा शक्ति-भारत को विश्वगुरु बनाने की त्रिवेणी - प्रो. त्रिभुवन शर्मा

एमडीएस यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित आईसीसीसी का हुआ भव्य समापन

अजमेर/संवाददाता। सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ केवल मंचीय प्रस्तुतियाँ नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता और आत्मा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। संस्कृति जीवन जीने की वह पद्धति है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है और समय के साथ परिष्कृत होती रहती है। आज मंच पर प्रस्तुत नृत्य, संगीत और लोककलाएँ उस हजारों वर्षों पुरानी सांस्कृतिक धारा का परिणाम हैं, जिसे अनेक पीढ़ियों ने तपस्या से संजोया है। उक्त विचार राजस्थान वेटेरनरी विश्वविद्यालय एवं बृज विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो त्रिभुवन शर्मा ने अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता ''**दिग्नाद**'' के समापन समारोह के अवसर पर सत्यार्थ सभागार मे व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा आबादी है। विश्व की कुल युवा जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत भारत में है। यही युवा शक्ति यदि दिशावान और संस्कारित हो जाए, तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। दिशावान होने का अर्थ केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति और मूल्यों से जुड़ना है। यही संस्कार युवा शक्ति को सही दिशा देते हैं। उन्होने बताया कि आज की प्रस्तुतियों में जो आनंद और आत्मीयता महसूस हुई, वह शब्दों या धुनों से नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान से उत्पन्न हुई। पश्चिमी अंधानुकरण क्षणिक होता है, जबकि अपनी संस्कृति से जुड़ा परिवर्तन स्थायी और सशक्त होता है इसलिए आवश्यक है कि युवा अपनी जड़ों को पहचानें, अपनी संस्कृति को अपनाएँ और उसी के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान दें। यही मार्ग भारत को एक सशक्त, आत्मविश्वासी और विश्वगुरु राष्ट्र बना सकता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति की महत्ता और सांस्कृतिक आयोजनों की भूमिका को रेखांकित करता है। संस्कृति केवल परंपराओं का संग्रह नहीं, बल्कि वह जीवंत शक्ति है जो अतीत और भविष्य को वर्तमान में जोड़ती है। ''**एक भारत श्रेष्ठ भारत**'' जैसे अभियान इसी भावना को सुदृढ़ करते हैं, जिससे देश की विविध संस्कृतियाँ एक-दूसरे को समझें और अपनाएँ। तीन दिवसीय समारोह में प्रस्तुत नृत्य, संगीत और साहित्य ने यह सिद्ध किया कि संस्कृति शब्दों की सीमाओं से परे जाकर सीधे हृदय से संवाद करती है। रफुद्दीन मेवाती का गायन इसका श्रेष्ठ उदाहरण रहा, जिसे बिना शब्द समझे भी सभी ने गहराई से अनुभव किया। कार्यक्रमों का केंद्र भारत, राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक चेतना रहा। वक्ता ने ''***चौथी आँख***'' अर्थात रचनात्मकता और विवेक को जागृत रखने की आवश्यकता पर बल दिया, क्योंकि यही किसी भी समाज को नई दिशा देता है। ऐसे आयोजन युवाओं की रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को सशक्त बनाते हैं। उन्होने बताया कि पिछले 10 वर्षों में भारत ने जो परिवर्तन किए हैं, उन्हें आगे बढ़ाना हम सभी का दायित्व है। संस्कृति के आधार पर किया गया परिवर्तन ही स्थायी और सार्थक होता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध लोककलाकर गफरुद्दीन मेवाती थे। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा अभिजीत दवे एवं मोहित जैन के निर्देशन में विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के विध्यार्थियों द्वारा निर्मित एक लघु समाचार पत्र का विमोचन भी किया गया।

इससे पूर्व कार्यक्रम प्रतिवेदन अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने प्रस्तुत किया एवं आभार ज्ञापन कुलसचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने किया। कार्यक्रम मे विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या मे छात्र एवं छात्राएं उपस्थित थे।

ICCC-2026''दिग्नाद''

जहाँ सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर ने समग्र विजेता बनकर बाज़ी मारी, वहीं द्वितीय विजेता सोफिया कॉलेज और राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर ने भी बहुआयामी सांस्कृतिक प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। विभिन्न कलात्मक, साहित्यिक, नाट्य एवं नृत्य विधाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता और उपलब्धियाँ इस आयोजन को अविस्मरनीय बनाया।

पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने निकाला टब्लोइड पेपर

आईसीसीसी 2026 की गतिविधियों को लेकर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने निकाला टब्लोइड पेपर

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'' के अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रायोगिक शिक्षा देने का प्रयास

यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय सांस्कृतिक प्रतियोगिता ''दिग्नाद'' 2026 का तीन दिवसीय आयोजन का समापन समारोह धूमधाम से यूनिवर्सिटी के सत्यार्थ सभागार संपन्न हुआ।

आईसीसीसी-2026में: विश्वविद्यालय ने एक अलग कीर्तिमान स्थापित करते हुए स्थापना के बाद से पहली बार कैंपस में संचालित कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने लघु समाचार पत्र प्रकाशित किया। आईसीसीसी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान वेटनरी यूनिवर्सिटी के कुलगुरु प्रो. त्रिभुवन शर्मा, विशिष्ठ अतिथि पद्मश्री पुरस्कार नामित रुदीन मेवाती ओर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एमडीएस यूनिवर्सिटी अजमेर के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने इस विशेष प्रकाशन का विमोचन किया।

मौजूदा दौर में पत्रकारिता और जनसंचार के माध्यम से न सिर्फ समाचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान में अहम भूमिका निभाने वाले इस महक में विद्यार्थी किस तरीके से अपनी भावनाओं और तथ्यों को समाहित करते हुए कार्य को आगे संपादित करते हैं इसका यह प्रकाशन एक जीवंत उदाहरण रहा।

कुलगुरु प्रो.अग्रवाल के मार्गदर्शन में इस विशेष प्रकाशन का मात्र 48घंटे के अंदर तीन दिवसीय आयोजन के समग्र समावेश के जरिए हुआ। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की प्रथम सेमेस्टर की विद्यार्थी मानसी माहेश्वरी, नेहा शर्मा और लोकेश कश्यप की मेहनत से इसका प्रकाशन संभव हो सका।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शिव प्रसाद के निर्देशन में अतिथि शिक्षक अभिजीत दवे और मोहित जैन ने पिछले तीन दिनों में तमाम गतिविधियों को समाहित करते हुए सभी पहलुओं का निष्पक्ष रूप से प्रस्तुतीकरण किया। विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार इस तरीके का एक विशेष विशेषण का विमोचन किया गया जिसको लेकर कुलगुरु प्रो. अग्रवाल ने न सिर्फ विभाग को साधुवाद दिया बल्कि प्रयास करने वाले तमाम शिक्षकों और विद्यार्थियों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

पत्रकारिता अपने आप में मूल स्वरूप को जानते हुए तथ्यों की बारीकी से पड़ताल कर जनता के बीच में निष्पक्ष राय प्रस्तुत करने का कार्य करती है। यह विशेषांक भी इस दृष्टि में एक अभिनव प्रयास रहा जिसे न सिर्फ कुलगुरु ने बल्कि विश्वविद्यालय और इस प्रतियोगिता में शामिल हुए तमाम अन्य महाविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भी सराहा। यूनिवर्सिटी के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों और शिक्षकों का यह प्रयास है कि आने वाले वक्त में ''***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020***''के अंतर्गत जिस तरीके के मापदंड तय किए गए उसी के अनुरूप विद्यार्थी न सिर्फ सैद्धांतिक बल्कि प्रयोग शिक्षा के जरिए समाज में अपने आप को उपयोगी साबित कर सके।

सम्पादकीय

एपस्टिन फाइल्स : सत्ता की हनक का प्रतीक

एपस्टीन से जुड़ी जाँच फाइलें केवल किसी एक व्यक्ति के अपराधों का दस्तावेज़ नहीं हैं, बल्कि वे उस वैश्विक मानसिक स्थिति का प्रतिबिंब हैं, जिसमें सत्ता, धन और प्रभाव ने मनुष्यता को पीछे छोड़ दिया। यह तथ्य अपने आप में चिंताजनक है कि जिन नामों का उल्लेख इन फाइलों में आया है, वे अलग-अलग देशों, संस्कृतियों, रंगों, जातियों और धर्मों से आते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि समस्या किसी एक समाज की नहीं, बल्कि उस मानसिकता की है जो स्वयं को नियमों से ऊपर मानने लगती है।

जब किसी व्यक्ति के पास अत्यधिक शक्ति और साधन आ जाते हैं, तब उसके भीतर यह भ्रम जन्म लेने लगता है कि उसके लिए हर सीमा शिथिल है। यही भ्रम धीरे-धीरे संवेदनहीनता में बदल जाता है। दूसरे मनुष्य को वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं, बल्कि अपने सुख का साधन समझने लगता है। नाबालिग बालिकाएँ, जिनका संरक्षण समाज का कर्तव्य है, ऐसे विकृत दृष्टिकोण में सबसे आसान शिकार बन जाती हैं, क्योंकि वे कमजोर होती हैं, निर्भर होती हैं और अक्सर अपनी पीड़ा व्यक्त करने में असमर्थ होती हैं।

आधुनिक समय की उपभोक्तावादी संस्कृति ने इस विकृति को और बढ़ाया है। जब जीवन का उद्देश्य केवल भोग, प्रदर्शन और सुख-साधनों का संग्रह बन जाता है, तब नैतिक विवेक धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है। मनोरंजन उद्योग, डिजिटल प्लेटफॉर्म और दिखावटी जीवनशैली ने देह को वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे उम्र, मर्यादा और सहमति जैसी अवधारणाएँ गौण होती चली गईं। परिणामस्वरूप, कुछ लोगों के लिए अपराध भी एक 'विशेष सुविधा' जैसा बन गया।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि जब लगभग हर देश में कानून हैं, अंतरराष्ट्रीय संधियाँ हैं और मानवाधिकारों की घोषणाएँ हैं, तब भी ऐसे अवैधानिक कृत्य वर्षों तक कैसे चलते रहे। इसका उत्तर यही है कि कानून पुस्तकों में तो जीवित रहते हैं, लेकिन जब उन्हें लागू करने वाली संस्थाएँ प्रभाव, भय या स्वार्थ से ग्रस्त हो जाती हैं, तब न्याय निष्प्रभावी हो जाता है। जब अपराध करने वाले ही सत्ता और व्यवस्था के केंद्र में हों, तब सामान्य नागरिक के लिए न्याय पाना कठिन हो जाता है और प्रभावशाली लोगों के लिए हर दरवाज़ा अपने आप खुलता चला जाता है।

यहीं से समाज में दोहरी व्यवस्था जन्म लेती है-एक आम आदमी के लिए और दूसरी ताकतवर लोगों के लिए। जिन स्थानों तक सामान्य व्यक्ति की पहुँच असंभव होती है, वहाँ प्रभावशाली लोग सहजता से पहुँच जाते हैं। यही असमानता अपराध को जन्म देती है और उसे लंबे समय तक जीवित भी रखती है।

इन परिस्थितियों से बचाव केवल कानून बनाने से नहीं होगा। इसके लिए समाज को कई स्तरों पर सजग होना पड़ेगा। सबसे पहले, परिवार और शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को यह सिखाना आवश्यक है कि उनकी देह, उनकी इच्छा और उनकी असहमति का महत्व क्या है। उन्हें बिना डर के 'ना' कहना सिखाया जाए और यह विश्वास दिलाया जाए कि सच बोलने पर उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा।

दूसरे, समाज को प्रभाव और प्रसिद्धि से अंधा होना छोड़ना होगा। किसी व्यक्ति की सफलता, पद या लोकप्रियता उसे नैतिक जाँच से मुक्त नहीं कर सकती। मीडिया, न्यायपालिका और नागरिक समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर न हो।

तीसरे, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना अनिवार्य है। सत्ता में बैठे लोगों के कार्यों पर निरंतर निगरानी, स्वतंत्र जाँच और समयबद्ध न्याय ही ऐसे नेटवर्क को पनपने से रोक सकते हैं।

चौथे, सांस्कृतिक स्तर पर यह पुनः स्थापित करना होगा कि संयम, मर्यादा और करुणा कमजोरी नहीं, बल्कि सभ्यता की पहचान हैं। जिन समाजों ने इन मूल्यों को जीवित रखा है, वे आज भी अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं।

एपस्टीन प्रकरण हमें यह याद दिलाता है कि नैतिक पतन अचानक नहीं होता, वह धीरे-धीरे तब होता है जब समाज छोटी-छोटी अनैतिकताओं को नज़रअंदाज़ करता रहता है। यदि आज भी हमने समय रहते चेतना नहीं जगाई, तो नाम, स्थान और चेहरे बदलते रहेंगे, पर अपराध की प्रकृति बनी रहेगी। इसलिए यह केवल दूसरों की कहानी नहीं है, यह हम सभी के लिए आत्मपरीक्षा का अवसर है-कि हम किस प्रकार का समाज भविष्य की पीढ़ियों को सौंपना चाहते हैं।

शिवांगी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में

टीवी इंडस्ट्री की मशहूर एक्ट्रेस शिवांगी जोशी इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं। उनके और अभिनेता कुशाल टंडन के ब्रेकअप की खबरों ने सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है। हाल ही में कुशाल ने एक पोस्ट शेयर कर इस बात का खुलासा किया कि उनका और शिवांगी का पांच महीने पहले ही रिश्ता खत्म हो चुका है। हालांकि उन्होंने यह पोस्ट कुछ ही मिनटों में डिलीट कर दिया, लेकिन तब तक फैन्स इसका स्क्रीनशॉट ले चुके थे। अब शिवांगी जोशी ने भी एक पोस्ट साझा की है, जिसमें उन्होंने खुद से प्यार करने और खुद को सहारा देने की बात कही है। उन्होंने लिखा, बेबीगर्ल, अभी अपने आप से थोड़ा ज्यादा प्यार करो। तुम बहुत कुछ संतुलित कर रही हो और अपना बेस्ट दे रही हो। अपना पूरा ग्रेस दो। बता दें कि दोनों की मुलाकात जुलाई 2023 में शुरू हुए शो बरसातें- मौसम प्यार का के दौरान हुई थी और अक्टूबर 2023 में कुशाल ने रिश्ते की पुष्टि की थी। उस समय उन्होंने कहा था कि वह प्यार में हैं लेकिन शादी की कोई जल्दी नहीं है। अब पांच महीने पहले ही उनके रास्ते अलग हो चुके हैं।

भारत में प्रदूषण को लेकर बढ़ती असंवेदनशीलता

-:: (यतीश चन्द) ::-

भारत की राजधानी दिल्ली आज वायु प्रदूषण के कारण कराह रही है। इसी के साथ दिल्ली आज केवल राजनीतिक और प्रशासनिक शक्ति का केंद्र नहीं रही, बल्कि देश में बढ़ते पर्यावरणीय संकट का सबसे बड़ा प्रतीक भी बन चुकी है। दुनिया के तीन सबसे अधिक प्रदूषित महानगरों में दिल्ली का शामिल होना किसी एक वर्ष या एक सरकार की विफलता नहीं, बल्कि वर्षों से चली आ रही सामूहिक लापरवाही और असंवेदनशीलता का परिणाम है। विडंबना यह है कि दिल्ली में देश की सर्वोच्च संवैधानिक संस्थाएं, न्यायपालिका और नीति-निर्माण के सभी प्रमुख केंद्र मौजूद हैं, फिर भी प्रदूषण की भयावह स्थिति पर प्रभावी और स्थायी समाधान आज तक नहीं निकाला जा सका है।

पिछले कई वर्षों से दिल्ली का प्रदूषण राजनीतिक आरोपङ्क्तिप्रत्यारोप का विषय बना रहा है। जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार थी, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बढ़ते प्रदूषण के लिए हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान को जिम्मेदार ठहराया। वहीं भारतीय जनता पार्टी ने इसे राजनीति करार देते हुए दिल्ली सरकार को कठघरे में खड़ा किया था। इस दौरान मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचे, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने भी संज्ञान लिया, लेकिन जमीनी स्तर पर ठोस और दीर्घकालिक समाधान नहीं हो सका। यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रदूषण जैसी जटिल और बहु-राज्यीय समस्या से निपटने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी केंद्र सरकार की थी। केंद्र को चाहिए था कि वह पड़ोसी राज्यों के साथ समन्वय बनाकर कृषि अवशेष जलाने, औद्योगिक प्रदूषण, निर्माण गतिविधियों और वाहनों से निकलने वाले धुएं पर एक साझा रणनीति तैयार करता। दुर्भाग्य से ऐसे प्रयास या तो आधे-अधूरे रहे या केवल कागजों तक सीमित रह गए। इसी तरह एनजीटी से भी जिस सख्ती और निरंतर निगरानी की अपेक्षा थी, वह देखने को नहीं मिली, परिणामस्वरूप समस्या साल दर साल और गंभीर होती चली गई।

आज स्थिति यह है कि दिल्ली में ट्रिपल इंजन सरकार है, यानी केंद्र, राज्य और नगर निगम, तीनों जगह भारतीय जनता पार्टी का शासन है। जो आरोप कभी भाजपा, आम आदमी पार्टी पर लगाती थी, वही सवाल आज भाजपा से पूछे जा रहे हैं। चिंता की बात यह है कि इस वर्ष प्रदूषण ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। यह केवल असुविधा का विषय नहीं रहा, बल्कि सीधे तौर पर जानलेवा बन चुका है। दिल्ली के डॉक्टरों द्वारा दी जा रही चेतावनियां बेहद गंभीर हैं। अस्पतालों में मरीजों की जांच के दौरान फेफड़ों की स्थिति कोरोना महामारी के समय जैसी पाई जा रही है।

बच्चों और बुजुर्गों पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है। हालात इतने खराब हैं कि डॉक्टर लोगों को सलाह दे रहे हैं कि यदि संभव हो तो प्रदूषण कम होने तक कुछ समय के लिए दिल्ली छोड़ दें। किसी भी राजधानी के लिए इससे अधिक शर्मनाक और खतरनाक स्थिति क्या हो सकती है? यह संकट केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है। देश के उत्तरी राज्यों के कई शहरों में हवा की गुणवत्ता लगातार गिरती जा रही है, लेकिन इसके बावजूद केंद्र सरकार और राजनीतिक दलों की असंवेदनशीलता चिंता पैदा करती है। हालात की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कुछ देशों ने अपने नागरिकों के लिए दिल्ली यात्रा को लेकर एडवाइजरी जारी कर दी है।

इससे भारत की वैश्विक छवि को भी गहरा नुकसान पहुंच रहा है। और भी चिंताजनक यह है कि जब सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश यह कहने को मजबूर हों कि उनके पास कोई जादू की छड़ी नहीं है, तो आम नागरिक खुद को पूरी तरह असहाय महसूस करता है। जिस दिल्ली में सत्ता, व्यवस्था और संसाधनों का संकेंद्रण है, अगर वहां लोगों का जीवन सुरक्षित नहीं है, तो बाकी देश के हिस्सों का भविष्य क्या होगा, यह सवाल स्वाभाविक है।

आज जरूरत है कि केंद्र और राज्य सरकारें राजनीति से ऊपर उठकर प्रदूषण को राष्ट्रीय आपात स्थिति की तरह लें। न्यायिक संस्थाओं को भी केवल टिप्पणियों तक सीमित न रहकर प्रभावी निगरानी और सख्त अनुपालन सुनिश्चित करना होगा। समय रहते यदि सभी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे, तो प्रदूषण केवल हवा को ही नहीं, बल्कि देश के भविष्य को भी जहरीला बना देगा। यह स्थिति काफी भयावह है। इस हालात से निकलने के लिए सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझना होगा, तभी समाधान संभव है।

शेयर बाजार की मामूली बढत के साथ शुरुआत

सेंसेक्स 200 अंक बढ़कर 83 हजार 980 पर, निफ्टी 25 हजार 600 पर

मुंबई (ईएमएस)। वैश्विक बाजारों से पॉजिटिव रुख के बीच भारतीय शेयर बाजार सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को मामूली बढ़त के साथ लगभग सपाट स्तर पर खुले। बीएसई सेंसेक्स में बढ़त दर्ज की गई और शुरुआती कारोबार में यह 200 से ज्यादा अंक बढ़कर 83,985 के स्तर पर पहुंच गया। अमेरिकी टैरिफ की समयसीमा में संभावित ढील की उम्मीद के चलते यह बढ़त दर्ज की गई। वहीं आज कई कारक शेयर बाजार की चाल की तय करेंगे। इनमें ग्लोबल मार्केटस के संकेत, अमेरिका में टैरिफ को लेकर अनिश्चितता, प्राथमिक बाजार में गतिविधि, मिडिल ईस्ट में तनाव, साथ ही विदेशी मुद्रा भंडार के आंकड़े और संस्थागत निवेशकों की गतिविधियां शामिल हैं। सेक्टोरल मोर्चे पर 13 प्रमुख सेक्टर्स में से 12 में तेजी आई। ब्रोडर स्मॉल-कैप और मिड-कैप में लगभग 0.4 फीसदी की वृद्धि हुई। मिडिल ईस्ट में तनाव कम होने के कारण पिछले तीन ट्रेडिंग सेशन के दौरान निफ्टी और बीएसई सेंसेक्स में लगभग 2.3त्न की वृद्धि हुई है। विदेशी पूंजी प्रवाह के प्रति आशावाद और पॉजिटिव वैश्विक धारणा के कारण पिछले तीन सेशन में देखी गई मजबूत बढ़त आज भी जारी रही।

एशियाई बाजार- एशियाई बाजार में शुक्रवार को मजबूती के साथ कारोबार देखा जा रहा है। इसका कारण अमेरिका से मिले सकारात्मक संकेत रहे, जहां व्हाइट हाउस ने टैरिफ (आयात शुल्क) की समय-सीमा को लेकर नरम रुख दिखाया है। इससे निवेशकों को बड़ी राहत मिली है। जापान का निक्केई 1.22 फीसदी चढ़ा, जो पिछले पांच महीनों के उच्चतम स्तर को और मजबूत कर रहा है। टॉपिक्स इंडेक्स में भी 1.1 फीसदी की तेजी देखी गई। टोक्यो में कोर कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स जून में सालाना आधार पर 3.1 फीसदी बढ़ा, जो मई के 3.6फीसदी और अनुमानित 3.3 फीसदी से नीचे रहा। दक्षिण कोरिया का कोस्पी और ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स 200 भी 0.4 फीसदी की बढ़त में रहे।

अमेरिकी बाजार- अमेरिका में गुरुवार को शेयर बाजारों में जोरदार तेजी रही। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.8फीसदी चढ़कर 6,141.02 पर बंद हुआ और अब वह फरवरी में बने अपने ऑल-टाइम हाई 6,147.43 के बेहद करीब है।

नेस्डेक कम्पोजिट 0.97 फीसदी चढ़कर 20,167.91 पर बंद हुआ, जबकि डाउ जोंस में 404.41 अंकों की बढ़त रही और यह 43,386.84 पर बंद हुआ। हालांकि, अमेरिका की अर्थव्यवस्था को लेकर चिंता बनी हुई है। 2025 की पहली तिमाही में अमेरिका की जीडीपी सालाना आधार पर 0.5 फीसदी घटी है, जो पहले के 0.2 फीसदी के अनुमान से ज्यादा है। यह गिरावट मुख्य रूप से उपभोक्ता खर्च में कमी और निर्यात के आंकड़ों में बड़ी गिरावट की वजह से आई है।

कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित कृषक कल्याण की दिशा में बजट घोषणाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए-कृषि मंत्री

जयपुर। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ.किरोड़ी लाल ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों की खुशहाली और कृषि विकास के लिए विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का प्रभावी संचालन कर रही है। उन्होंने विभाग से संबंधित बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के निर्देश दिए, ताकि सरकार की मंशा के अनुरूप किसानों को योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किया जा सके।

कृषि मंत्री बुधवार को पंत कृषि भवन, जयपुर में कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की योजनाओं, कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की समीक्षा कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2025-26की बजट घोषणाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। कृषि मंत्री ने कहा कि उन्नत एवं वैज्ञानिक खेती अपनाने वाले प्रगतिशील किसानों के अनुभव अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जिनसे उत्पादन एवं आय में वृद्धि संभव है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में प्रगतिशील किसानों के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएं, ताकि किसान फसल चक्र के अनुरूप उन्नत किस्मों के चयन, फसल प्रबंधन तथा खाद-बीज के संतुलित उपयोग की तकनीकों को अपनाकर उत्पादन बढ़ा सकें।

उन्होंने कहा कि कस्टम हायरिंग सेंटर लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, थ्रेशर सहित आधुनिक कृषि यंत्रों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन केंद्रों की स्थापना एवं संचालन में और अधिक सुगमता तथा गति लाने के निर्देश देते हुए उन्होंने किसानों को अधिकाधिक लाभ पहुंचाने पर विशेष जोर दिया।

कृषि मंत्री ने किसानों की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण के लिए प्रत्येक जिले में जिला स्तरीय जन शिकायत निवारण बैठक के नियमित आयोजन के निर्देश दिए। साथ ही बजट घोषणाओं के तहत प्रदेश में स्थापित किए जा रहे सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने पर बल दिया, ताकि किसानों को कृषि में नवीन तकनीकों की जानकारी एवं लाभ प्राप्त हो सके।

बैठक में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, बूंद-बूंद एवं फव्वारा सिंचाई, ग्रीनहाउस, शैडनेट एवं पॉलीहाउस से संबंधित अनुदान योजनाओं की समीक्षा करते हुए कृषि मंत्री ने अधिकाधिक किसानों को इन योजनाओं से जोड़ने के निर्देश दिए। बैठक में प्रमुख शासन सचिव कृषि मंजू राजपाल ने विभागीय अधिकारियों को किसानों के हित से जुड़े निर्णयों में तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक में आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल सहित कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे, जबकि जिलों के अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक से जुड़े।

अजमेर में पेयजल लाइनों को सीवरेज से अलग करने की मांग तेज, व्यापारिक महासंघ ने बजट में प्रावधान की उठाई मांग

अजमेर/संवाददाता। शहर में लगातार दूषित पेयजल की शिकायतों और जलजनित बीमारियों के बढ़ते खतरे को देखते हुए श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ ने सरकार से बड़ी मांग की है। महासंघ ने आगामी बजट 2026-27 में योजनाबद्ध तरीके से पेयजल आपूर्ति लाइनों को सीवरेज और नालों की लाइनों से अलग शिफ्ट करने के लिए बजट प्रावधान करने की मांग उठाई है।

महासंघ के कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र मूरजानी तथा संस्थापक व महासचिव रमेश लालवानी ने बताया कि शहर के कई इलाकों में पेयजल लाइनें सीवरेज और नालों के बेहद नजदीक या समान मार्ग में डली हुई हैं, जिससे पाइपलाइन लीकेज की स्थिति में गंदा पानी पेयजल में मिल जाता है। इससे गंभीर बीमारियों का खतरा बना रहता है।

उन्होंने कहा कि दयानन्द कॉलोनी, रामनगर, धोला भाटा, गुलाब बाड़ी, आदर्श नगर, नया बाजार सहित कई क्षेत्रों से लगातार दूषित पानी की आपूर्ति की शिकायतें मिल रही हैं। महासंघ के अनुसार, देश के अन्य शहरों में भी दूषित पानी से जनहानि के मामले सामने आ चुके हैं, जो इस समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं।

महासंघ ने मांग की है कि:-

1. पेयजल लाइनों की योजनाबद्ध शिफ्टिंग की जाए, 2. सीवरेज व नालों से सुरक्षित दूरी सुनिश्चित की जाए, 3.भविष्य में नई लाइनों के लिए अलग सुरक्षित मार्ग बनाया जाए, 4. इन कार्यों के लिए बजट 2026-27 में विशेष फंड निर्धारित किया जाए।

इस मांग के समर्थन में महासंघ के चेतन सैनी, सरदार भजन सिंह, आशीष शर्मा, दिनेश मूरजानी, किशन पारीक, चन्द्र प्रकाश सोनी, प्रिवेश जोशी, हरीश अगनानी, दीपक नवलानी, विजय खेमानी, विजय गोयल, ठाकुर प्रसाद, साहिल टेकचन्दानी, रामपाल सेन सहित अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

महासचिव रमेश लालवानी ने कहा कि यह केवल व्यापारियों का मुद्दा नहीं बल्कि पूरे शहर के स्वास्थ्य से जुड़ा विषय है, इसलिए सरकार को इसे प्राथमिकता में लेना चाहिए।

... दुनियाभर में बढ़ रही है ध्यान योग की स्वीकार्यता!

पतंजलि के योगसूत्र से लेकर गीता के उपदेश तक हर जगह ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।अभी तक कुछ लोग योग आसनों को ही ध्यान समझते रहे हैं, लेकिन देश दुनिया मे राजयोग के माध्यम से स्वयं को देहभान से परे कर आत्मस्वरूप में रहकर परमात्मा के प्रति ध्यान लगाने की विधि को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने ही पहुंचाया है। शारिरिक आसन के द्वारा हम अपने शरीर को मजबूत करने के साथ ही रोग मुक्त बना सकते हैं, ताकि ध्यान लगाकर हम एक साथ तन-मन को लाभ पहुंचा सकते है। हमारा शरीर एक जगह पर स्थिर हो और ध्यान की प्रक्रिया आसानी से हो सके इसके लिए श्रीमद् भगवद् गीता में ध्यान को लेकर महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं, और साथ ही इससे होने वाले लाभ का भी गीता में उल्लेख किया गया है।

भगवद् गीता में ध्यान को एक योगक्रिया माना गया है। जो आपको आत्म अनुशासन की ओर ले जाता है। निरंतर इसका अभ्यास करने से एकाग्रता बढ़ती है, तनाव से मुक्ति मिलती है। मानसिक स्थिरता और संतुलन भी ध्यान करने से प्राप्त होता है। विकारों से मुक्ति पाने और मन की निर्मलता के लिए भी ध्यान किया जाता है। ध्यान जब गहन होने लगता है तो व्यक्ति को समाधि की प्राप्त होने लगती है। ध्यान के जरिए आत्मा का परमात्मा से मिलन ही ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग है। यानि ध्यान वह योग प्रक्रिया है जिसके जरिये हम स्वयं पर सिद्धि प्राप्त करते हैं। ध्यान करने वाले व्यक्ति का मन नियंत्रित रहता है और वो वर्तमान में जीता है। मानसिक और शारीरिक स्थिरता को ही ध्यान कहा जा जाता है।

गीता के पंचम और षष्ठम अध्याय में योग करने की सही विधि की जानकारी हमको मिलती है। श्रीकृष्ण ने परमात्म निमित्त बन अर्जुन को महाभारत के युद्ध के समय बताया है कि, कैसे मन और इंद्रियों को वश में करने के लिए ध्यान क्रिया की जानी चाहिए।

गीता के अनुसार, ध्यान करने के लिए सबसे पहले किसी शुद्ध स्थान पर आसन बिछाकर बैठना चाहिए। हालांकि इस बात का ध्यान रखें कि, ना ही स्थान बहुत ऊंचा हो और ना ही बहुत नीचे। आसन पर बैठने के बाद अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करनी चाहिए और इंद्रियों और मन को नियंत्रिण में लाने का अभ्यास करना चाहिए।

ध्यान करने के लिए सिर व गले को समान और अचल रखते हुए सुखासन में योगी को बैठना चाहिए। बाहरी चीजों से ध्यान को हटाकर नासिका के अग्र भाग यानि दोनों भौहों के बीच जहां आत्मा निवास करती है,के प्रति ध्यान केंद्रित करना चाहिए। तत्पश्चात सभी प्रकार के विषयों से मन को हटाकर नेत्रों को भृकुटी के मध्य में स्थिर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद प्राण और अपान वायु को सम करना चाहिए।

इसके बाद मन के सभी विकारों से दूर होकर, उत्तेजनारहित और शांति के साथ ध्यान और ईश्वर के चिंतन में बैठे रहना चाहिए। इस तरह से निर्मल और निर्विकार व्यक्ति परमतत्व का ध्यान करते हुए आनंद की अंतिम सीमा को प्राप्त करता है और उसे शांति मिलती है। गीता के अनुसार, ध्यान उसका ही सिद्ध होता है, जो न अधिक खाता है और ना ही अधिक भूखा रहता है। अधिक जगाने या सोने वाले को भी ध्यान की सिद्धि प्राप्त नहीं होती। सुख में अत्यधिक खुश और दुख में ज्यादा दुखी होने वाला व्यक्ति भी ध्यान को सिद्ध नहीं कर पाता। गीता में बताया गया है कि, जो व्यक्ति उचित आहार-विहार करता है, उसी को ध्यान-योग में सिद्धि प्राप्त होती है।

गीता में बताई गई इन शिक्षाओं को जीवन में आजमाकर हम ध्यान कर सकते हैं और मानसिक शांति पा सकते हैं। ध्यान करने से हमको न केवल मानसिक शक्ति मिलती है, बल्कि अपने लक्ष्यों को भी हम पा सकते हैं। ध्यान हमारी एकाग्रता को बढ़ाता है और हम अपना शतप्रतिशत अपने लक्ष्य को दे पाते हैं। इसके साथ ही एक आदर्श और व्यवस्थित समाज भी ध्यान के जरिए हम स्थापित कर सकते हैं। ध्यान मानसिक और शारीरिक विकारों को दूर करता है, यानि स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी ध्यान करना अति आवश्यक है। इस वर्ष विश्व ध्यान दिवस की थीम आंतरिक शांति, वैश्विक सद्भाव है। पतंजलि के योगसूत्र से लेकर गीता के उपदेश तक हर जगह ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोर समूह के अन्य देशों के साथ मिल कर भारत ने 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में घोषित करने के प्रस्ताव को स्वीकार किया है। वास्तव में ध्यान मानसिक तथा शारीरिक विकारों को दूर करने में कारगर होने के साथ ही यह स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी प्रेरित करता है। विश्व ध्यान दिवस को एक अंतरराष्ट्रीय उत्सव भी हम कह सकते है, जिसमें शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक कल्याण के लिए ध्यान का अभ्यास करने का संकल्प लिया गया है। भारत के साथ श्रीलंका, नेपाल, मैक्सिकों, लिकटेंस्टीन और अंडोरा जैसे 193 सदस्यीय देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में विश्व ध्यान दिवस के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित करने में अहम भूमिका निभाई। जिसे आत्मसात करने के लिए 140 देशों की अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज़ ने एक सार्थक पहल की है। ब्रह्माकुमारीज का उद्देश्य दुनिया मे शांति को बहाल करना है। इसके लिए, यह संस्था लोगों को सहज राजयोग की विधि सिखाती है। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ के ज़रिए लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया जाता है। इसी ईश्वरीय ज्ञान के जरिए युग परिवर्तन होना अवश्य सम्भावी है।

अवैध खनन अभियान को लेकर जिला कलक्टर की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित

अजमेर/संवाददाता। माननीय मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण पर प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला कलक्टर लोक बन्धु की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए विस्तृत चर्चा की गई।

जिला कलक्टर श्री लोक बन्धु ने निर्देश दिए कि अवैध खनन अभियान के अंतर्गत प्रभावी कार्यवाही की जाए। इसमें जिले के संवेदनशील स्थानों एवं पूर्व में चिन्हित हॉटस्पॉट्स पर विशेष रूप से सघन एवं निरंतर कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि खनन गतिविधियों के संबंध में निचले स्तर तक सूचना तंत्र सुदृढ़ किया जाए। उन्होंने संयुक्त कार्यवाही कर खनन माफियाओं के मशीन, वाहन एवं प्रॉपर्टी जब्त कर आर्थिक क्षति पहुंचाने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि उपखंड स्तर पर गठित टास्कफोर्स अभियान अवधि में पूर्ण सतर्कता रखते हुए अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण की गतिविधियों पर प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें। साथ ही टास्कफोर्स द्वारा अवैध रूप से भंडारित खनिजों के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई करते हुए नियमानुसार जब्ती की जाए।

जिला कलक्टर ने निर्देशित किया कि विशेष जांच टीम के माध्यम से समस्त संबंधित विभाग आपसी समन्वय से सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान करें। इससे अवैध गतिविधियों पर तत्काल एवं निर्णायक कार्रवाई की जा सकेगी। लीज धारकों द्वारा पर्यावरण संरक्षण की शर्त अनुसार विकास एवं खनन किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा अभियान के दौरान आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाए। अवैध खनन माफियाओं के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

बैठक में अवैध खनन की रोकथाम के लिए आधुनिक तकनीकों के उपयोग, नियमित मॉनिटरिंग, चेक पोस्टों की सुदृढ़ व्यवस्था एवं वैकल्पिक मार्गों पर विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि अभियान को परिणामोन्मुखी बनाते हुए जिले में अवैध खनन की किसी भी संभावना पर पूर्णत: अंकुश लगाया जाए।

इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलक्टर नरेंद्र कुमार मीणा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ दीपक कुमार, अजमेर विकास प्राधिकरण, परिवहन, वन तथा अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

पीएफएमटीआई द्वारा नवनियुक्त कनिष्ठ लेखाकारों के पाँच सप्ताह के संस्थानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

अजमेर/संवाददाता। वित्त विभाग राजस्थान सरकार के अधीन स्थापित पब्लिक फाइनेंशियल मैनेजमेंट एंड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट जयपुर द्वारा राज्य सरकार द्वारा नवनियुक्त कनिष्ठ लेखाकारों के पाँच सप्ताह के संस्थानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 29 दिसम्बर 2025 से 31 जनवरी 2026तक राजस्व अनुसंधान एवम् प्रशिक्षण संस्थान अजमेर में किया जा रहा हैं।

संस्थान के सयुँक्त निदेशक व पाठ्यक्रम प्रभारी राजस्थान लेखा सेवा के श्री परशुराम सैनी ने अवगत कराया कि निदेशक कोष एवं लेखा विभाग द्वारा नवनियुक्त कनिष्ठ लेखाकारों के संस्थानिक प्रशिक्षण को समयबद्ध आयोजित करवाने हेतु 102 प्रशिक्षणार्थियों को नामित किया था। इस प्रशिक्षण को सभी कनिष्ठ लेखाकारों को संपादित करना अनिवार्य होता हैं। प्रशिक्षण उपरांत विभागीय परीक्षाएं ली जाएगी। इसमे उतीर्ण होने के उपरांत ही कनिष्ठ लेखाकारो का सेवा में स्थाईकरण किया जाएगा। संस्थान का यह षष्टम् बैच हैं। प्रशिक्षण में विभिन्न विषयों जैसे राजस्थान सेवा नियमों, सामान्य वित्त एवं लेखा नियमों, राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम व नियम, लोक निर्माण वित्त एवं लेखा नियमों, बजट, कोषागार नियम, लेखांकन,एलएफएडी की कार्य-प्रणाली, पेंशन नियमों, सूचना का अधिकार अधिनियम, यात्र भत्ता नियमों, सीसीए रूल्स, लोक सेवाओ के गारंटी अधिनियम इत्यादि विषयों पर दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा व्याख्यान दिए गए।

कार्यक्रम का समापन रंगारंग कार्यक्रम के साथ सूचना केंद्र स्थित हाल में आयोजित किया गया जिसमे प्रशिक्षु कनिष्ठ लेखाकारों द्वारा शिक्षकों का सम्मान किया गया तथा कार्यक्रम को कोषाधिकारी श्री भागीरथ सिंह लखावत, सेवानिवृत आरएएस श्री शंकर लाल बैरवा, श्री राकेश उतरेजा, मोहिंद्र पंजाबी, पूर्व निदेशक कोष एवं लेखा के. सी. टेलर, सेवानिवृत लेखा सेवा अधिकारी नरेन्द्र माथुर, लोकपाल नरेगा सुरेश सिंधी द्वारा संबोधित करते हुए प्रशिक्षण की महत्ता बताते हुए सरकार में उनकी भूमिका के सुचारू निर्वहन की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर वरिष्ठ लेखाधिकारी बबीता जाखड़, अतिरिक्त कोषाधिकारी सविता सिंह भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सैनी ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अजमेर संभाग के विभिन्न विभागों में पदस्थापित 102 कनिष्ठ लेखाकारों ने भाग लिया। प्रशिक्षण समाप्ति उपरांत सभी को पुन: मूल पदस्थापन स्थान के लिए कार्यमुक्त किया जाएगा।

डाक जीवन बीमा-अजमेर डाक मण्डल बना करोड़पति मण्डल

अजमेर/संवाददाता। भारतीय डाक जीवन बीमा के माध्यम से क्षेत्र के निवासियों को अन्य कम्पनियों के मुकाबले सस्ती दरों पर बड़ी राशि के बीमे उपलब्ध कराए गए। भारतीय डाक विभाग के पोस्टमास्टर जनरल, राजस्थान दक्षिणी क्षेत्र, अजमेर बी.एल. सोनल द्वारा वित्तीय सशक्तिकरण के तहत भविष्य की बचत एवं सुरक्षित जीवन के लिए डाकघर की महत्वपूर्ण योजना डाक जीवन बीमा (पीएलआई) एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा (आरपीएलआई) के विशेष अभियान की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत अजमेर डाक मण्डल को माह जनवरी 2026में करोड़पति मण्डल के रूप में चयनित किया। अजमेर डाक मण्डल को माह जनवरी 2026में एक करोड़ रुपए का नया प्रीमियम अर्जित किए जाने का लक्ष्य प्राप्त हुआ।

प्रवर अधीक्षक डाकघर, अजमेर मण्डल देवीलाल सहारण ने बताया कि मण्डल द्वारा माह जनवरी में अब तक एक करोड़ रुपए का नवप्रीमियम जमा करवाकर 500 से अधिक परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हुए विभाग जारी पॉलिसीयों के माध्यम से एक करोड़ से अधिक का प्रीमियम अर्जित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि इन 500 परिवारों को कुल 40 करोड़ का बीमा उपलब्ध करवाया गया। सहारण ने बताया कि भारतीय डाक विभाग की अत्यन्त लोकप्रिय डाक जीवन बीमा एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा से अधिकाधिक आजमन को जोड़ने एवं वित्तीय आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से इस अभियान की शुरुआत पोस्टमास्टर जनरल राजस्थान दक्षिणी क्षेत्र, अजमेर बी. एल. सोनल द्वारा की गई।

उन्होंने बताया कि डाक जीवन बीमा एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा भारत सरकार की कम प्रीमियम पर सर्वाधिक बोनस प्रदान करने वाली आकर्षक बीमा योजना है। इसमें जमा राशि आयकर में छूट भी प्राप्त होती है। पूर्व में मात्र सरकारी एवं अर्द्धसरकारी विभागों में कार्यरत कर्मचारी ही बीमा योजना के लिए पात्र थे। अब भारत सरकार द्वारा इस योजना का विस्तार करते हुए स्नातक डिग्रीधारक व्यक्तियों को भी पात्रता प्रदान कर दी गई। ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले हर व्यक्ति ग्रामीण डाक जीवन बीमा योजना पात्र है। विभाग की इन सुविधाओं का लाभ आसानी से किसी भी नजदीकी डाकघर जाकर लिया जा सकता है।

यह उल्लेखनीय है कि डाक जीवन बीमा योजना भारत सरकार के भारतीय डाक विभाग द्वारा सन् 1884 से निरंतर संचालित सर्वाधिक बोनस प्रदान करने वाली बीमा योजना है जो सरकारी कर्मचारियों में अत्यधिक प्रचलित है। डाक विभाग की ओर से जीवन बीमा योजनाएं ग्रामीण एवं शहरी सभी वर्गों के लिए संचालित की जा रही है। इनमें महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए विशेष योजनाएं, दिव्यांगजन एवं ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत आमजन के लिए ग्रामीण डाक जीवन बीमा योजना है। विभाग की बीमा योजना हेतु 19 से 55 वर्ष तक आयु के व्यक्ति पात्र है। ग्रामीण डाक जीवन बीमा के अंतर्गत 10 लाख तक बीमा तथा डाक जीवन बीमा के अंतर्गत अधिकतम 50 लाख तक का बीमा करवाया जा सकता है। डाक जीवन बीमा में एक लाख के बीमाधन के लिए 5200 रुपये प्रतिवर्ष का बोनस प्रदान किया जाता है जो अन्य किसी भी बीमा कम्पनियों की तुलना में बहुत अधिक है।

देवीलाल सहारण ने बताया कि जनवरी 2026माह के इस महत्वपूर्ण अभियान के दौरान अजमेर डाक मण्डल के कर्मचारियों के द्वारा जिले के सभी सरकारी, स्वायत्तशासी एवं निजी कार्यालयों में सघन सम्पर्क कर बीमा के महत्व को समझाया। आमजन को बीमा के संबंध में जागरुकता फैलाई। उन्हीं के अथक प्रयासों से यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई है।

ग्राम उत्थान शिविर-2026

सिंगावल शिविर में किसान मोती लाल को मिली तारबंदी अनुदान की स्वीकृत

अजमेर/संवाददाता। पंचायत समिति भिनाय के अंतर्गत सिंगावल में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर में किसानों को राहत प्रदान की गई। शिविर में पडांगा निवासी मोती लाल ने उपस्थित होकर आवारा पशुओं से हो रहे फसल नुकसान की समस्या रखी। इस पर विभाग द्वारा त्वरित कार्यवाही की गई।

शिविर प्रभारी ने बताया कि मोती लाल पुत्र बिज्जू रेगर ने शिविर में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कृषि आजीविका का एकमात्र साधन होने के कारण फसल सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। इस पर कृषि विभाग द्वारा उन्हें तारबंदी योजना के अंतर्गत 40 हजार रुपए की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई।

उन्होंने बताया कि स्वीकृति मिलने से अब किसान अपने खेत के चारों ओर तारबंदी करवा सकेंगे जिससे फसल सुरक्षित रहेगी। लाभार्थी ने योजना का लाभ मिलने पर राज्य सरकार एवं प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

फसल सुरक्षा-जसराज को मिली 40 हजार रुपए की सहायता

अजमेर/संवाददाता। सिंगावल में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर में किसानों की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया गया। शिविर में पडांगा निवासी जसराज ने आवारा पशुओं से फसल को बचाने के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। जसराज पुत्र छोटु गुर्जर ने शिविर में उपस्थित होकर आवेदन किया। कृषि विभाग के प्रभारी ने त्वरित कार्यवाही करते हुए उन्हें तारबंदी योजना की जानकारी दी। खेत के चारों ओर तारबंदी के लिए 40 हजार रुपए की अनुदान राशि की वित्तीय स्वीकृति जारी की।

इस सहायता से किसान को अपनी फसल बचाने में मदद मिलेगी। सरकारी योजना का लाभ तत्काल मिलने पर लाभार्थी ने शिविर अभियान की प्रशंसा की।

स्वामी व प्रकाश महेश चंद रांगोरा द्वारा मुद्रक गोपाल सिंह लबाना, गुरुनानक प्रिंटिंग प्रेस, प्लॉट नम्बर 2, पत्रकार कॉलोनी, कोटड़ा, अजमेर से मुद्रित व कार्यालय जी-7 सातवीं मंजिल, गुरु अभय रेजिडेन्सी, पंचशील ब्लॉक, अजमेर से प्रकाशित
सम्पादक-महेश चंद रांगोरा व कार्यकारी सम्पादक-सहर। समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र अजमेर ही रहेगा। मो.-8107416712, E-mail Id: marudharatoday.info@gmail.com